डॉ. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच.डी.जैन कालेज, आरा

"प्राचीन काल से आधुनिक काल तक भारतीय रंगमंच
(Indian Theatre: From Ancient to Modern Times)

भूमिका :

भारतीय रंगमंच (Indian Theatre) विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध नाट्य परंपराओं में से एक है। भारत में नाटक केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि यह धार्मिक अनुष्ठान, नैतिक शिक्षा, सामाजिक आलोचना और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय रंगमंच ने निरंतर परिवर्तन, प्रयोग और नवाचार के साथ अपनी पहचान बनाए रखी है।

1. प्राचीन भारतीय रंगमंच (Ancient Indian Theatre)
(क) नाट्यशास्त्र और उसकी परंपरा
भारतीय रंगमंच की सैद्धांतिक नींव भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र (लगभग 200 ई.पू. – 200 ई.) में मिलती है। नाट्यशास्त्र को “पाँचवाँ वेद” भी कहा जाता है।
नाट्यशास्त्र की प्रमुख विशेषताएँ—
नाटक को लोक और वेद दोनों से जुड़ा कला रूप माना गया
रस सिद्धांत: शृंगार, वीर, करुण, हास्य, रौद्र, भयानक, बीभत्स, अद्भुत (बाद में शान्त रस)
अभिनय के चार प्रकार:
आंगिक
वाचिक
आहार्य
सात्त्विक
रंगमंच की संरचना, मंच सज्जा, संगीत और नृत्य का विस्तार से वर्णन

(ख) संस्कृत नाटक
प्राचीन काल में संस्कृत नाटक अत्यंत विकसित अवस्था में थे।
प्रमुख नाटककार—
कालिदास – अभिज्ञान शाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्
भास – स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिज्ञायौगंधरायण
शूद्रक – मृच्छकटिकम्
विशाखदत्त – मुद्राराक्षस
विशेषताएँ—
राजदरबार और अभिजात वर्ग से जुड़ा रंगमंच
सामाजिक जीवन, प्रेम, राजनीति और नैतिक मूल्यों का चित्रण
संस्कृत और प्राकृत भाषाओं का प्रयोग

2. मध्यकालीन भारतीय रंगमंच (Medieval Indian Theatre)
मध्यकाल में संस्कृत नाटक का पतन हुआ, लेकिन लोक रंगमंच का व्यापक विकास हुआ।
(क) धार्मिक और भक्ति आंदोलन का प्रभाव
भक्ति आंदोलन ने रंगमंच को जनसाधारण से जोड़ा।
लोकनाट्य परंपराएँ—
रामलीला (उत्तर भारत)
रासलीला (ब्रज क्षेत्र)
कीर्तन (बंगाल)
यक्षगान (कर्नाटक)

कथकली (केरल)
तामाशा (महाराष्ट्र)
(ख) विशेषताएँ
सरल भाषा और संवाद
संगीत, नृत्य और अभिनय का समन्वय
धार्मिक कथाओं और लोककथाओं पर आधारित कथानक
मंच और दर्शक के बीच सीधा संवाद
मध्यकालीन रंगमंच जन-संस्कृति का प्रतिनिधि बन गया।

3. औपनिवेशिक कालीन भारतीय रंगमंच (Colonial Period Theatre)
(क) पाश्चात्य प्रभाव
अंग्रेज़ी शासन के साथ भारतीय रंगमंच पर पश्चिमी नाट्य परंपरा का प्रभाव पड़ा।
मुख्य परिवर्तन—
गद्य संवादों का प्रचलन
प्रोसीनियम स्टेज (Proscenium Stage)
टिकट प्रणाली और स्थायी रंगशालाएँ
यथार्थवाद और सामाजिक विषय

(ख) पारसी रंगमंच (Parsi Theatre)
19वीं सदी में पारसी थिएटर ने आधुनिक भारतीय रंगमंच को दिशा दी।
विशेषताएँ—
उर्दू–हिंदी मिश्रित भाषा
मेलोड्रामा, गीत और भव्य मंच सज्जा
सामाजिक सुधार और ऐतिहासिक कथाएँ
जनता में अत्यंत लोकप्रिय

(ग) राष्ट्रीय चेतना और रंगमंच
रंगमंच स्वतंत्रता आंदोलन का भी माध्यम बना।
देशभक्ति और सामाजिक सुधार के नाटक
ब्रिटिश सत्ता की आलोचना
सेंसरशिप के बावजूद नाटकों का मंचन

4. आधुनिक भारतीय रंगमंच (Modern Indian Theatre)
(क) स्वतंत्रता के बाद का रंगमंच
1947 के बाद भारतीय रंगमंच में नए विचार और प्रयोग सामने आए।
प्रमुख विशेषताएँ—
सामाजिक यथार्थवाद
राजनीतिक और वैचारिक नाटक
क्षेत्रीय भाषाओं में नाट्य लेखन
लोक और आधुनिक शैलियों का संयोजन

(ख) प्रमुख आधुनिक नाटककार
हिंदी रंगमंच—
मोहन राकेश – आषाढ़ का एक दिन, आधे अधुरे, धर्मवीर भारती – अंधा युग ,
गिरीश कर्नाड – तुगलक, हयवदन,
अन्य भाषाओं में—
विजय तेंदुलकर (मराठी)
बादल सरकार (बंगाली)

महेश दत्तानी (अंग्रेज़ी)

(ग) संस्थागत विकास
राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD), दिल्ली
संगीत नाटक अकादमी,
क्षेत्रीय थिएटर ग्रुप्स,

5. समकालीन भारतीय रंगमंच (Contemporary Theatre)
(क) नए प्रयोग
स्ट्रीट थिएटर (नुक्कड़ नाटक),
महिला और दलित विमर्श,
पर्यावरण और मानवाधिकार विषय,
मल्टीमीडिया और प्रयोगात्मक मंचन।

(ख) वैश्वीकरण का प्रभाव :
अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय नाटक,
पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों का मिलन,
डिजिटल थिएटर और ऑनलाइन प्रस्तुति।

निष्कर्ष

भारतीय रंगमंच ने प्राचीन संस्कृत नाटकों से लेकर आधुनिक प्रयोगात्मक रंगमंच तक एक लंबी और समृद्ध यात्रा तय की है। यह यात्रा न केवल कला का विकास दर्शाती है, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति और विचारधाराओं के परिवर्तन की भी कहानी कहती है। आज भी भारतीय रंगमंच अपनी परंपरा और आधुनिकता के संतुलन के साथ जीवंत और प्रासंगिक बना हुआ है।